## साथ को सिखापन

**सुनो साथ मेरे सिरदार, वचन कहूं सो ग्रहो निरधार।**
**एते गुन आपनसों कर, बैठे आपन में माया देह धर।। १ ।।**

हे मेरे सिरदार सुन्दरसाथ! सुनो, मैं जो कहती हूं उसे निश्चित रूप से धारण करो। धनी अपने ऊपर इतने एहसान करके अपने बीच में ही माया में तन धारण कर बैठे हैं।

**भानो भरम वचन देख कर, छोड़ो नींद रोसनी हिरदे धर।**
**श्रीधाम के धनी केहेलाए, सो बैठे आपन में इत आए।। २ ।।**

इन वचनों को देखकर अपने संशय मिटाओ तथा तारतम वाणी को हृदय में लेकर माया छोड़ो। जो धाम के धनी कहलाते हैं, वह अपने बीच आकर तन धारण कर बैठे हैं।

**सेवा कीजे पेहेचान चित धर, कारन अपने आए फेर।**
**भी अवसर आयो है हाथ, चेतन कर दिए प्राणनाथ।। ३ ।।**

धनी की पहचान कर चित्त से उनकी सेवा करो। अपने वास्ते वह फिर से आए हैं। फिर मौका अपने हाथ आया है और प्राणनाथ धनी ने अपने को सावचेत (सावधान) भी कर दिया है।

**इन ऊपर और कहा कहूं, मैं श्रीधनीजी के चरने रहूं।**
**कर जोड़ करूं विनती, दूर ना होऊं बेर पाओ पल जेती।। ४ ।।**

अब इसके ऊपर और क्या कहूं? सिवाय इसके कि धनी के चरणों में बैठी रहूं और हाथ जोड़कर विनती करूं तथा एक क्षण के लिए भी अलग न होऊं।

।। प्रकरण ।। १३ ।। चौपाई ।। ३१४ ।।

## जीव को सिखापन

**मेरे अंध अभागी जीव, तूं क्यों सूता इत।**
**बिध बिध धनिऐं जगाइया, अजहूं ना घर सूझत।। १ ।।**

हे मेरे अन्धे अभागे जीव ! तू यहां क्यों सोता है? धनी ने तुझे तरह-तरह से जगाया फिर भी तुझे घर की सुध नहीं आती।

**आगे भी तें कहा कियो, चल गए पिउ जब।**
**अवगुन ना देखे अपने, पिउ मेहेर करी फेर अब।। २ ।।**

आगे भी तूने क्या किया जब धनी आकर चले गए। तू अपने अवगुण नहीं देखता। धनी ने फिर से कृपा की है।

**धाम धनी तुझ कारने, आए माया में दोए बेर।**
**मेहेर ना देखे पिउ की, ऐसो हिरदे निपट अंधेर।। ३ ।।**

धाम धनी तेरे लिए माया में दो बार आए। तू धनी की कृपा नहीं देखता। ऐसा कठोर, हृदय से अन्धा हो गया।

Nijanand App

**आप पकड़ तूं अपना, बल कर आंखां खोल।**
**दूध पानी दोऊ जाहेर, देख नीके तारतम बोल।।४।।**

तू अपने आपको संभाल और हिम्मत करके आंखें खोल। अब तारतम वाणी से विचार कर देख, दूध और पानी (ब्रह्म और माया) दोनों जाहिर हो गए हैं।

**पेहेले तो आंखां फूटियां, अब तो कछुक संभाल।**
**ए जासी अवसर हाथ से, पीछे होसी कौन हवाल।।५।।**

पहले तो अज्ञानता थी। अब तो कुछ संभल। यह अवसर जब हाथ से निकल जाएगा तब तेरी क्या हालत होगी?

**आगे उलटा हुआ अकरमी, अजहूं ना करे कछु सुध।**
**जागत नहीं क्यों जोर कर, ले हिरदे मूल बुध।।६।।**

हे बदनसीब ! पहले भी तू विमुख रहा और अभी भी तुझे कुछ सुध नहीं आ रही। जागृत बुद्धि हृदय में लेकर, ताकत लगाकर क्यों नहीं जागता?

**पुकार सुनी दोऊ पिउ की, वतन देखाया नजर।**
**उठी ना अंग मरोर के, अब आई नजीक फजर।।७।।**

तुमने दोनों तनों से (श्री देवचन्द्रजी के तन की तथा श्री इन्द्रावतीजी के तन की) धनी की आवाज सुनी है। जिससे उन्होंने अपने घर की पहचान कराई है। फिर तू अंग मरोड़कर क्यों नहीं उठता? फजर (उषा काल) नजदीक आ गयी है।

**तारतम देख विचार के, पिउ ल्याए बेर दोए।**
**एती आग सिर पर जली, तूं रह्या खांगडू होए।।८।।**

तारतम वाणी से विचार करके देख। धनी तेरे लिए दो बार ज्ञान लेकर आए हैं। इतनी मार (वाणी की) सिर पर पड़ी, पर तू खांगडू मूंग की तरह गला नहीं।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ३२२ ॥

**मेरे जीव अभागी रे, जिन भूले तूं अब।**
**इन मोहजल से काढ़न वाला, ऐसा ना मिलसी कोई कब।।१।।**

हे मेरे बदनसीब जीव ! तू अब मत भूल। इस तरह से भवसागर से निकालने वाला कभी भी नहीं मिलेगा।

**ए गुन तूं याद कर, जो किए अनेक सजन।**
**तूं क्यों सूता जीव अभागी, देकर साहेबी मन।।२।।**

तू धनी की उन कृपाओं को याद कर, जो धनी ने हमारे ऊपर बेशुमार की हैं। फिर भी अभागे जीव! तू अपने अहंकार में क्यों सो रहा है?

Nijanand App